"सहायक संधि"
(1798 ई.)

रूपरेखा :-
1) भूमिका
2) सहायक संधियां
3) सहायक संधि की विशेषताएं :—
1) यदि देशी शासक इस अवस्था को स्वीकार करता है
उसे राज्य मे एक निश्चित संख्या मे ब्रिटिश सैनिक रखने पड़ते थे और उन सैनिक की कमान अंग्रेज अफसर के हाथो मे होती थी।
2) सैनिको का काम था उस राज्य की रक्षा करना, बाहरी आक्रमणो से,
3) सैनिको का खर्च का भार स्वयं राज्य को वहन करना पड़ता था।
4. (सहायक संधि - व्यवस्था के अन्तर्गत संरक्षित राज्य) मे आपस मे कोई विवाद उठ खड़ा होगा तो उसके निपटारे के लिए कम्पनी की सरकार पंच का काम करेगी
5. इस राज्य के बाह्य सम्बन्ध (विदेशनीति) पर कम्पनी का नियन्त्रण होगा।
6. हर संरक्षित राज्य मे एक ब्रिटिश रेजीडेंट रहेगा

महत्वपूर्ण सहायक संधि :—
1) हैदराबाद के साथ संधि
2) मैसूर के साथ संधि
3) पेशवा के साथ संधि
4) सिंधिया के साथ संधि
5)

सहायक संधि के गुण :—

1) आंतरिक विद्रोह तथा बाह्य आक्रमण से सुरक्षा
2) देशी राज्यों के बीच युद्ध की समाप्ति
3) आर्थिक उन्नति
4) कम्पनी को लाभ
5) कम्पनी की सैनिक सीमाओं में वृद्धि
6) फ्रांसीसियों के भय से मुक्ति

हानियाँ :—

1) संरक्षित राज्यों की आर्थिक अवस्था को आघात
2) संरक्षित राज्यों में प्रशासन के मामलों में उदासीनता
3) देशी राज्यों में भ्रष्टाचार तथा विलासिता को बढ़ावा
4) देशी राज्यों में सैनिक तथा कूटनीतिक प्रतिभा की कमी

निष्कर्ष

सन्दर्भ :—

डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति (हड़प नीति)

रूपरेखा
1) भूमिका
2) विजयों द्वारा राज्यों की हड़पना :—
1) द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध और पंजाब का विलय (1849)
2) लोअर बर्मा अथवा पीगू का राज्य विलय (1852)
3) सिक्किम विजय
4) पंजाब पर अधिकार सतारा, सम्बलपुर, झांसी, नागपुर
5) बर्मा पर अधिकार
7) बरार और अवध को अंग्रेजी राज्य मे मिला लिया

साम्राज्यवादी नीति कार्यान्वित करने के नीति :—

1) युद्ध द्वारा विजय
2) कुशासन का आरोप
3) गोद लेने की प्रथा का निषेध करके
4) कर्ज की राशि के बकाया होने का आरोप लगाना
5) पेन्शन पदों की समाप्ति

विलय के सिद्धांत :—

1) वे रियासते जो कभी उच्चतर शक्ति के अधीन नहीं थी और न ही कर देती थी।

2) वे भारतीय रियासते जो मुगल अथवा पेशवा के अधीन थी और उन्हे कर देती थी किन्तु अब वे अंग्रेजों के अधीनस्थ थी।

3) वे रियासते जो अंग्रेजो ने सनदों द्वारा स्थापित की थी

थी अथवा पुनर्जीवित की गयी थी।

डलहौजी की राज्य नीति का मूल्यांकन :—

1) प्राचीन परम्परा की समाप्ति तथा लूट

2) आश्रित रियासतों तथा संरक्षित मित्र रियासतों का भेद समाप्त

3) प्राचीन परम्पराओं को तोड़ना तथा साम्राज्यवादी भावना से प्रेरित

4) विलय करना

(3)

निष्कर्ष

संदर्भ :—

"अध" उद्योग एवं आपार का हास"

1) भूमिका
(2) डी. आर गाडगिल
(3) बी. डी. बसु:
4) ग्रामीण शिल्प
5) ग्रामीण जीवन निर्वाहक उद्योग
6) ग्रामीण कला उद्योग
7) नगरिय कला एवं शिल्प उद्योगो का हास
8. कुटीर उद्योगो के पतन के कारण :—
(1) ब्रिटिश शासन की स्थापना
(2) औद्योगिक क्रांति
(3) रेलवे का विकास
4) भारतीय शासको तथा उनके राजदरबारो का लुप्त होना
(5) अकाल
6) अन्य कारण ;—

डी. आर गाडगिल एवं मेजर बी. डी. बसु :—

1) भारत मे अबाध ब्रिटिश आपार शुरू होना
2) भारत मे निर्मित वस्तुओ पर ब्रिटेन मे बिक्री के लिए भारी लगाना।
3) भारत से कच्चे माल का निर्यात करना।
4) सीमा शुल्क और परिवहन कर लगाना
5) भारत मे रहने वाले अंग्रेजो को विशेष सुविधाए प्रदान
6) भारत मे रेलवे निर्माण

7) भारतीय कारीगरों को अपनी गुप्त बात बतलाने के लिए विवश किया गया।

7) आधुनिक उद्योग का विकास

8) आधार

9) भारत की जनसंख्या वृद्धि एवं गरीबी में बढ़ोतरी

10) भारत में धन की निकासी

"लार्ड कर्जन"
(1898)

1) भूमिका
2) अकाल तथा प्लेग
3) कृषि सम्बन्धी सुधार :—
1) पंजाब भूमि हस्तान्तरण अधिनियम
2) कृषि बैंक
3) सहकारी ऋण समितियां
4) कृषि विभाग की स्थापना
5) कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना
6) सिंचाई सुविधाएं
7) लगान एकत्रित करने मे अधिक लचीलापन

4) आर्थिक सुधार :— रेलवे
5) प्राचीन स्मारक सुरक्षा अधिनियम
6) पुलिस सुधार
7) सैन्य सुधार
8) व्यापार तथा व्यापारिक सुधार
9) प्रशासनिक सुधार
10) शैक्षिक सुधार
11) कलकत्ता निगम पर राजकीय नियन्त्रण

लार्ड विलियम बैंटिंक

1) भूमिका
2) लार्ड मैकाले
3) न्याय सम्बंधी सुधार :—

   (1) दौरा न्यायालयो की समाप्ति तथा राजस्व एवं दौरा आयुक्तो की नियुक्ति
   (2) दण्डाधीशो के अधिकारो मे वृद्धि
   (3) कलक्टरो को लगान सम्बन्धी मुकदमो को सुनने का अधिकार देना
   (4) आपराधिक न्याय का काम जिला न्यायाधीशो को सौंपना

4) आर्थिक सुधार :—

   (1) सैनिक तथा असैनिक नौकरियो मे खर्च की कमी तथा बचत
   (2) न्याय विभाग मे व्यय की कमी
   (3) अफीम के निर्यात मे सुधार
   (4) माफी जमीन का अपहरण
   (5) जागीरो तथा रियासतो का अपहरण
   (6) लगान की लाभकारी व्यवस्था

5) शासन सम्बंधी सुधार :—

   (1) भारतीयो को उच्च पदो पर नियुक्त करना
   (2) भूमि व्यवस्था मे सुधार

(5) सामाजिक सुधार :—

(1) सती प्रथा का अन्त

(2) दासी समाप्त करना

(3) नर हत्या तथा मानव बलि का निषेध

(4) दास प्रथा का अन्त

(5) धर्म परिवर्तन की सुविधा

(6) स्त्रियों के प्रति उदार दृष्टिकोण

(6) शिक्षा संबंधी सुधार :—

मूल्यांकन.

निष्कर्ष

संदर्भ

कृषक एवं मजदूर आंदोलन

1) भूमिका
2) कृषक आंदोलन के कारण :—
   (1) खराब आर्थिक स्थिति
   (2) कृषि का वाणिज्यीकरण
   (3) आधुनिक उद्योगों का विकास
   (4) कृषि का ह्रास होना
   (5) खराब भू-व्यवस्था बंदोबस्त — रैयतवाड़ी, स्थायी बंदोबस्त,
   (6) अंग्रेजी सरकार की नीति महाजनी अवस्था,
   (7) अकाल एवं लोग की स्थिति

कृषक आंदोलन :—
   (1) नील विद्रोह
   (2) गरीब कृषकों का विद्रोह
   (3) पंजाब के कृषकों में असन्तोष
   (4) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा कृषक आन्दोलन
   (5) चम्पारण में विद्रोह
   (6) बारदोली आन्दोलन
   7) असहयोग आंदोलन व कृषक
   8) मोपला कृषक आंदोलन

महलवाड़ी व्यवस्था

1) पृष्ठ भूमि
2) व्यवस्था
3) स्वरूप
4) व्यवस्था के गुण :—

1. समय-समय पर लगान की राशि निर्धारित किया जाता था
2. लगान राशि जमीन की उत्पादन क्षमता, उगाई जाने वाली फसलों और उसकी फसल कीमतों के अनुसार निर्धारित की जाती थी।
3. भूमि का निजी स्वामित्व
4. व्यक्तिगत कर निर्धारण और कर अदायगी
5. कर भुगतान के तरीके में परिवर्तन

दोष :—

1. लगान में वृद्धि
2. जमींदारी पद्धति
3. कृषि का वाणिज्यीकरण
4. सामाजिक परिणाम
5. सुधार कार्य धीमी गति से
6. अनुभवी प्रशिक्षित राजस्व अधिकारी की कमी
7.

रैयतवाड़ी व्यवस्था

1) भूमिका
2) रैयतवाड़ी व्यवस्था का स्वरूप
3) भू राजस्व का संग्रह सीधे सरकारी कर्मचारी करते थे।
4) मद्रास मे रैयतवाड़ी व्यवस्था
5) बम्बई मे रैयतवाड़ी व्यवस्था

रैयतवाड़ी बन्दोबस्त के लाभ :—

आर्य समाज

1) भूमिका
2) जीवन परिचय (स्वामी दयानंद सरस्वती)
3) आर्य समाज एवं उसके सिद्धांत :—

① ईश्वर ही समस्त ज्ञान का प्रमुख कारण है। सब सत्य, विद्या, और वे पदार्थ जो विद्या से जाने है।

② ईश्वर सत्य, शिव, सुन्दर, शाश्वत, असीमित, दयावान, अजन्मा, सर्वशक्तिमान अतुलनीय एवं अपरिवर्तनीय है।

③ सत्य का ग्रहण और असत्य को त्याग देना चाहिए

④ सबसे धर्मानुसार यथायोग्य आचरण करना चाहिए

⑤ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

⑥ ~~संसार~~ संसार मे भलाई का कार्य करना समाज का मुख्य उद्देश्य है अतः ~~इसकी उन्नति करनी चाहिए~~। सबको शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

⑦ सार्वजनिक कल्याण के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहिए

⑧ अज्ञान के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहिए।

आर्य समाज की देन :—

① सामाजिक क्षेत्र मे
② आर्थिक क्षेत्र मे
③ राजनीतिक क्षेत्र मे।

(4) साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में।

(5) स्वामी दयानन्द के धार्मिक विचार :—

① वेदों में आस्था
② ईश्वर, जीव तथा जगत
③ कर्म, पुनर्जन्म तथा मोक्ष
④ परमात्मा की पूजा के तीन रूप धार्मिक कर्मकांड
⑤ मोक्ष के साधन
⑥ धार्मिक कर्मकांड
⑦ मूर्तिपूजा तथा अन्य कर्मकांडों का विरोध

(6) स्वामी दयानन्द जी का आर्य समाज के सामाजिक सिद्धांत तथा सुधार :—

① वर्ण व्यवस्था का समर्थन
② व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध
③ अछूतोद्धार का कार्य
④ शुद्धि आंदोलन
⑤ स्त्री उद्धार का कार्य